

 **UMRA**PRO

# हज का तरीका

Hajj Steps: Day-by-Day

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

# हज का तरीका

मुकम्मल रहनुमाई. अहादीस और हवालों के साथ

Hajj Steps: Day-by-Day Guide



अल्लाह तआला से दुआ है के इसका सवाब-ए-जारिया  
उम्मत-ए-मुहम्मद ﷺ के तमाम मरहूमीन को खुसूसन मेरी  
वालिदा मोहतरमा को ता-क़यामत अता फ़रमाए और उनके  
दरजात बुलंद फ़रमाए, आमीन.

Powered By:

Altitude Journey LLP

[www.UmraPro.com](http://www.UmraPro.com)

# हज की तीन क्रिस्में

हज की तीन क्रिस्में हैं:

1. हज-ए-इफ़राद,
2. हज-ए-क़िरान और
3. हज-ए-तमत्तुअ

## हज-ए-इफ़राद:

सफ़र के वक़्त सिर्फ़ हज की नियत की जाए उसी का एहराम बांधा जाए और उमरा को हज के साथ जमा न किया जाए उस हज का नाम **हज-ए-इफ़राद** है।

## हज-ए-क़िरान:

हज और उमरा दोनों की नियत एक साथ की जाए और एहराम भी दोनों का एक ही साथ बांधा जाए ऐसे हज का नाम **हज-ए-क़िरान** है।

## हज-ए-तमत्तुअ:

तीसरी क्रिस्म हज की यह है कि हज और उमरे को इस तरह जमा किया जाए कि **मीक़ात** से सिर्फ़ **उमराह** के लिए एहराम बांधा जाए और मक्का मुअज़्ज़मा पहुंच कर उमरा कर के एहराम ख़त्म कर दिया जाए फिर **आठवीं ज़िलहिज्जा** को जहां आप ठहरे हों वहां से हज का एहराम दोबारा बांधा जाए उस हज को **हज-ए-तमत्तुअ** कहते हैं।

## पहला दिन: 8 ज़िलहिज्जा — यौम-ए-तरविया

दोबारा एहराम बांधना: (अपनी होटल से दोबारा एहराम बांधें):

आठ ज़िलहिज्जा की सुबह को नमाज़ फ़ज़्र अदा करें, गुस्ल करें, मुमकिन हो तो खुशबू भी इस्तेमाल करें और हज का एहराम बांध लें और हज की नियत कर के, दो रकअत सुन्नतुल एहराम पढ़ के फिर लब्बैक पढ़ते हुए मिना की तरफ़ रवाना हो जाए।

हज की नियत:

لَبَّيْكَ اللَّهُمَّ حَجًّا  
लब्बैक अल्लाहुम्मा हज्जा

मर्द हो या औरत हो सब ने लब्बैक पढ़ना है। मर्द तलबिया ज़ोर से पढ़ेंगे और औरतें आहिस्ता पढ़ें:

तलबिया:

لَبَّيْكَ اللَّهُمَّ لَبَّيْكَ ۞ لَبَّيْكَ لَا شَرِيكَ لَكَ  
لَبَّيْكَ ۞ إِنَّ الْحَمْدَ وَالنِّعْمَةَ لَكَ وَالْمُلْكَ ۞  
لَا شَرِيكَ لَكَ

लब्बैक अल्लाहुम्मा लब्बैक, लब्बैका ला शरीका लका  
लब्बैक, इन्नल हम्दा वन्नि'अमता लका वल-मुल्क, ला  
शरीका लक

## मिना की तरफ़

इसके बाद आप मिना की तरफ़ रवाना हो जाएं, रास्ते में वादी-ए-महसब आएगी यह कंकरियों वाली वादी जन्नतुल मुअल्ला के करीब दो पहाड़ियों के दरमियान वाके है। इसके बाद जबल नूर आएगा। गार हिरा इसी जबल नूर के ऊपर है। जिस में रसूलुल्लाह ﷺ पर सब से पहली वही नाज़िल हुई थी।

ज़िलहिज्जा 8 को सुन्नत के मुताबिक़ जुहर से पहले हम ने मिना में पहुंचना है।

बहरहाल, शौक़ के इन रास्तों से गुज़रते हुए मिना के वसीअ मैदान में जहां जगह मिले पड़ाव डाल दें और जुहर, असर, मगरिब, इशा, और फ़ज़्र की नमाज़ें क़सर कर के अदा करें लेकिन यहां नमाज़ों को जमा की सूरत में नहीं बल्कि हर नमाज़ को उस के वक़्त ही में अदा किया जाएगा। मिना में एक बहुत बड़ी मस्जिद है जिस का नाम मस्जिद ख़ैफ़ है यह मस्जिद मिना की मशहूर तरीन मस्जिद है।

मसनदे बिज़ार में हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से मरवी है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया “मस्जिद ख़ैफ़” में 70 अंबिया किराम अलैहिस्सलाम की क़ब्रें मौजूद हैं”। इस मस्जिद के करीब आप ﷺ ने कुर्बानी ज़बह की। मज़कूरा बाला पांचों नमाज़ इमाम के साथ इस मस्जिद में बाजमाअत अदा करना मुस्तहब है।

## दूसरा दिन: 9 ज़िलहिज्जा

### यौम-ए-अरफ़ा, यानी अरफ़ात का दिन

सूए अरफ़ात: मिना से अरफ़ात के तरफ़ रवानगी

ज़िलहिज्जा की 9 तारीख को तुलूअ आफ़ताब के बाद ( जब थोड़ी सी रौशनी फैलनी शुरू होजाए) इत्मीनान व सुकून के साथ सूए अरफ़ात की तरफ़ चल पड़ें। इसी रास्ते में **वादी-ऐ-महस्सर** आती है जहां **असहाब फ़ील** का वाक़िआ पेश आया था लिहाज़ा यहां से जल्दी सेगुज़रजाएं। इस जगह की निशानी यह है कि यहां रास्ता तंग है।

वुकूफ़-ए-अरफ़ात: अरफ़ात में क्रियाम

अरफ़ात में हज का वक़्त शुरू होगा **ज़वाल (दोपहर)** के बाद और दो नमाज़ें हमने इंशाअल्लाह अरफ़ात में पढ़नी है। **जुहर व असर** की नमाज़ें (जुहर के वक़्त में) जमा और क़सर की सूरत में एक अज़ान और दो इक़ामतों के साथ मैदान अरफ़ात ही में अदा की जाएंगी।

- जितने हाजी हैं यह मुसाफ़िर हैं, इन झगड़ों में न पढ़ें आप।
- आप क़सर भी करें और दो नमाज़ें मिलाना चाहें तो मिला सकते हैं।

अगर कोई हनफ़ी शख्स मक्का मुकर्रमा का मुक़ीम है और अपने मसलक पर अमल पैरा है, तो वह अपने ख़ेमे में अपने वक़्त पर जमाअत के साथ चार रकअत नमाज़ अदा करे।

जो हज़रात दो रकअत पढ़ते हैं उन पर एतराज़ न करें. और जो चार रकअत पढ़ते हैं उन पर भी एतराज़ न करें।

दो रकअत खुद हुज़ूर-ए-अकरम ﷺ ने पढ़ी हैं, और चार रकअत हज़रत उस्मान गनी रज़ियल्लाहु अन्हु से साबित हैं।

लिहाज़ा इस मसले में किसी पर एतराज़, तंज़ या तनक़ीद न की जाए, और न ही किसी को हक़ीर समझा जाए।

यहां पहुंच कर हुज़ूर सरवर काइनात सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के उस्वा ऐ हसना पर अमल करते हुए क़िब्ला रुख़ हो कर और दोनों हाथ उठा कर कसरत से ज़िक्र और दुआएं करें। अरफ़ा सारा मौक़िफ़ हैं यानी जहां भी जगह मिल जाए दुरुस्त है। लेकिन हुदूद अरफ़ा के अंदर हो। यहां आप गुरूबे आफ़ताब तक रहेंगे। याद रहे कि वुकूफ़े अरफ़ा हज का रुक्न-ए-आज़म है। (जो मैदान अरफ़ात में पहुंच गया उस का हज होगया)।

याद रहे कि मस्जिद-ए-नीमराह **वादी ऐ उरना** के अंदर है यानी अरफ़ात की हद से बाहर है। यानी **वादी ऐ उरना** अरफ़ात का हिस्सा नहीं. इस लिए वुकूफ़-ए-अरफ़ा, अरफ़ात की हुदूद के अंदर ही किया जाए।

अगर कोई शख्स हज के तमाम आमाल कर ले, लेकिन 9 ज़िलहिज्जा को हुदूद-ए-अरफ़ात में न जाए, तो वह हाजी नहीं कहलाएगा।

# अरफ़ात के वज़ीफ़ों में सब से अहम वज़ीफ़े

100 दफ़ा:

لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ ۝ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ  
الْحَمْدُ ۝ يُحْيِي وَيُمِيتُ ۝ وَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ

ला इलाहा इल्लल्लाहु वहदहू ला शरीका लहू, लहुल-मुल्कु  
वलहुल-हम्दु, युहयी व युमीतु, वहुवा अला कुल्लि शैइन  
क़दीर

सूरह इख़्लास 100 दफ़ा:

قُلْ هُوَ اللَّهُ أَحَدٌ ۝ اللَّهُ الصَّمَدُ ۝ لَمْ يَلِدْ وَلَمْ يُولَدْ ۝ وَلَمْ  
يَكُنْ لَهُ كُفُوًا أَحَدٌ ۝

कुल हुवल्लाहु अहद, अल्लाहुस्समद, लम यलिद वलम  
यूलद, वलम यकुल्लहू कुफुवन अहद

आयाते करीमा 100 दफ़ा:

لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ سُبْحَانَكَ إِنِّي كُنْتُ مِنَ الظَّالِمِينَ

ला इलाहा इल्ला अन्ता सुब्हानका इन्नी कुन्तु  
मिनज़़ालिमीन

दरूद इब्राहीमी 100 दफ़ा:

اللَّهُمَّ صَلِّ عَلَى مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِ مُحَمَّدٍ ۝ كَمَا صَلَّيْتَ عَلَى  
إِبْرَاهِيمَ وَعَلَى آلِ إِبْرَاهِيمَ ۝ إِنَّكَ حَمِيدٌ مَجِيدٌ ۝  
اللَّهُمَّ بَارِكْ عَلَى مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِ مُحَمَّدٍ ۝ كَمَا بَارَكْتَ عَلَى  
إِبْرَاهِيمَ وَعَلَى آلِ إِبْرَاهِيمَ ۝ إِنَّكَ حَمِيدٌ مَجِيدٌ ۝

अल्लाहुम्मा सल्लि अला मुहम्मदिन व अला आलि मुहम्मद, कमा  
सल्लैता अला इब्राहीमा व अला आलि इब्राहीमा, इन्नका हमीदुम  
मजीद।

अल्लाहुम्मा बारिक अला मुहम्मदिन व अला आलि मुहम्मद,  
कमा बारकता अला इब्राहीमा व अला आलि इब्राहीमा, इन्नका  
हमीदुम मजीद।

और वक्फ़े वक्फ़े से:

لَبَّيْكَ اللَّهُمَّ لَبَّيْكَ ۝ لَبَّيْكَ لَا شَرِيكَ لَكَ  
لَبَّيْكَ ۝ إِنَّ الْحَمْدَ وَالنِّعْمَةَ لَكَ وَالْمُلْكَ ۝  
لَا شَرِيكَ لَكَ

लब्बैक अल्लाहुम्मा लब्बैक, लब्बैका ला शरीका लका लब्बैक,  
इन्नल हम्दा वन्निअमता लका वल-मुल्क, ला शरीका लक

और खड़े हो कर वुकूफ़ करे और लंबी लंबी दुआएं मांगें।

और याद रखें कि हज का वक़्त (9 जुलहिज्जा) के दिन ज़वाल (दोपहर) के बाद से शुरू होता है, यह सारा दिन और सारी रात जारी रहता है, और (10 जुलहिज्जा) सुबह सादिक़ के वक़्त जा कर ख़त्म होता है।

**क्या मतलब ?** मिसाल के तौर पर अगर कोई आदमी की फ़्लाइट है वह इशा को उतरा जद्दा एयरपोर्ट पर ! वहीं से उस ने एहराम बांधा या अपने मुल्क से एहराम बांधा, नीयत करते हुए रात को 12 बजे अरफ़ात पहुंच गया वह भी हाजी है क्योंकि सारा दिन और सारी रात हज का वक़्त है।

और यह भी हुक्म है कि अरफ़ात में मौजूद आदमी या औरत मगरिब की नमाज़ से पहले वहां से न निकले। अगर कोई सूरज डूबने से पहले अरफ़ात से निकल गया तो उस पर दम (कुर्बानी) वाजिब होगी। उस के लिए ज़रूरी है के वापस हुदूद अरफ़ात के अंदर लौट आए।

## मुज़दलिफ़ा

मुज़दलिफ़ा ” इज़्दिलाफ़ “ से बना है जिस का मतलब है करीब होना। मुज़दलिफ़ा अरफ़ात और मिना के दरमियान वाक़े है। इसे मुज़दलिफ़ा इस लिए कहते हैं कि यहां अल्लाह का कुर्ब हासिल होता है।

ज़िलहिज्जा की 9 तारीख़ को गुरुबे आफ़ताब के बाद निहायत सुकून और वक्रार के साथ तलबिया पढ़ते हुए अरफ़ात से मुज़दलिफ़ा की तरफ़ रवाना हों।

अरफ़ात से मुज़दलिफ़ा पहुंच कर मगरिब व इशा की नमाज़ें (इशा के वक़्त में) जमा और क़सर की सूरात में अदा करें।

पहले मगरिब की नमाज़ अदा करेंगे, चाहे देर ही क्यों न हो जाए। हम क़ज़ा की नियत नहीं करेंगे अदा की नियत करेंगे।

3 रकअत फ़र्ज़ नमाज़ मगरिब की अदा करेंगे और उस के बाद फ़ौरन दो रकअत इशा की क़सर नमाज़ पढ़ेंगे, उस के बाद वित्र पढ़ेंगे।

रात मुज़दलिफ़ा ही में खुले आसमान के नीचे बसर करें। आप ﷺ से यहां कोई नफ़ली नमाज़ साबित नहीं बल्कि आप ﷺ रात में आराम भी फ़रमाया ।

उलमाओं ने लिखा है कि मुज़दलिफ़ा की रात बहुत फ़ज़ीलत वाली रात है, हत्ता कि इसे लैलतुल क़द्र जैसी अज़ीम रात के बराबर करार दिया गया है।

एक रिवायत में आता है कि हुज़ूर ﷺ ने हज़रत अबूबकर रज़ियल्लाहु अन्हु से फ़रमाया कि अबूबकर जो दुआएं मेरी अरफ़ात में क़बूल नहीं हुईं, वह मुज़दलिफ़ा में क़बूल हो गईं।

लिहाज़ा मुज़दलिफ़ा के अंदर फ़ज़्र की नमाज़ पढ़ना, उस के बाद खड़े हो के दुआ करना "वुजूब" व "वुकूफ़" वाजिब है अगर कोई नहीं करेगा तो दम पढ़ जाएगी।

हुक्म-ए-शरई: मुज़दलिफ़ा में वुकूफ़ करना वाजिब है। यह कुरआन करीम के हुक्म:

فَاذْكُرُوا اللَّهَ عِنْدَ الْمَشْعَرِ الْحَرَامِ (القرآن)

फ़ज़कुरुल्लाहा इंदल-मशअरिल-हराम (अल-कुरआन) की रौशनी में साबित है।

वुजूब का वक़्त: मुज़दलिफ़ा में वुकूफ़ का असल वक़्त दसवीं ज़िलहिज्जा की सुबह सादिक (फ़ज़्र) से तुलूअ आफ़ताब तक है। इस दौरान में सिर्फ़ एक लम्हे के लिए भी मौजूद रहना वाजिब की अदाईगी के लिए काफ़ी है।

नमाज़ फ़ज़्र मुज़दलिफ़ा में अदा करें। नमाज़ फ़ज़्र के बाद क़िब्ला रुख़ हो कर और दोनों हाथ उठा कर खूब अल्लाह तआला का ज़िक्र और दुनिया व आख़िरत की भलाई के लिए अल्लाह तआला से कसरत से दुआएं करें। सुन्नत से यही साबित है।

फिर तुलूअ आफ़ताब से पहले तलबिया पढ़ते हुए मुज़दलिफ़ा से मिना की तरफ़ रवाना हों। अगर आप के हमराह औरतें, बच्चे और बूढ़े हों तो फिर आधी रात को मुज़दलिफ़ा से मिना की तरफ़ रवाना हो जाने में भी कोई हरज नहीं और अपने साथ सात अदद कंकरियां भी ले जाएं ताकि जमरा-ए-अक़बा को रमी कर सकें।

बाक़ी कंकरियां मिना ही से ले लें, इसी तरह इन सात कंकरियों के मिना से लेने में भी कोई हरज नहीं जिन के साथ ईद के दिन जमरा-ए-अक़बा को रमी करना है।

मिना में पहुंच कर यह काम करें:

- 1) जमरा-ए-अक़बा को रमी करें, यह जमरा मक्का मुकर्रमा से करीब तरीन है. इसे मुसलसल एक एक करके सात कंकरियां मारें और हर कंकरी मारते हुए अल्लाहु अकबर पढ़ें। पहली कंकरी मारने के बाद तलबिया पढ़ना बंद कर दें।
- 2) अगर आप पर हदी वाजिब है (हदी से मुराद वह जानवर जो हाजी कुर्बानी के लिए अपने साथ ले जाते थे) तो उसे जुबाह करें हदी के गोशत को खुद भी खाएं और फुकरा को भी खिलाएं।

## जानवर की कुर्बानी (कुर्बानी / हदी)

- हज-ए-तमत्तुअ और हज-ए-क़िरान करने वालों के लिए कुर्बानी वाजिब है।
- अक्सर हुज्जाज यह इंतज़ाम अपनी एजेंसी या सऊदी हदी प्रोजेक्ट के ज़रिए पहले से कर लेते हैं। और कुर्बानी आप की तरफ़ से अदा की जाती है।

3) इस के बाद सर के बाल मुंडवा दें या कटवा दें लेकिन मुंडवाना अफ़ज़ल है। औरत के लिए उंगली के एक पोरे के बराबर बाल काट देना ही काफ़ी है।

तहलील-ए-अव्वल = एहराम की पाबंदियों से पहली मरहला वार आज़ादी

जब आप रमी कर लें, फिर कुर्बानी कर लें और बाल मुंडवा या कटवा दें तो आप को तहलील-ए-अव्वल हासिल हो गया। यानी अब आप एहराम उतार कर मामूल के कपड़े पहनेंगे और अब बीवी से मुक़ारबत के सिवा दीगर वह तमाम उमूर भी हलाल हैं जो एहराम की वजह से हराम हो गए थे।

इन तीन चीज़ों में **हनफ़ी मसलक** में तरतीब वाजिब है के पहले कंकरी मारे, फिर कुर्बानी करे और फिर सर मुंडवाए। अगर आगे पीछे हो जाए तो दम पड़ जाएगी। लेकिन बाक़ी अइम्मा के नज़दीक तरतीब वाजिब नहीं।

## तवाफ़-ए-इफ़ाज़ा (तवाफ़-ए-ज़ियारत)

अब मक्का मुकर्रमा चले जाएं और वहां जा कर तवाफ़-ए-इफ़ाज़ा (तवाफ़-ए-ज़ियारत) करें, मक़ाम-ए-इब्राहीम के पीछे दो रकअत नमाज़ (वाजिबु तवाफ़) अदा करें। और तवाफ़ के बाद सई भी करें. बशर्त यह आप का हज तमत्तुअ हो। इस तवाफ़ व सई के बाद बीवी से मुक़ारबत और वह तमाम उमूर हलाल हो जाते हैं जो एहराम की वजह से हराम हुए थे।

**हनफ़ी मसलक** में, तवाफ़-ए-ज़ियारत (या तवाफ़-ए-इफ़ाज़ा) के तीन दिन हैं:

ज़िलहिज्जा 10, 11, और 12 तारीख़ को सूरज डूबने से पहले पहले। इन तीनों दिनों में सूरज डूबने से पहले तक तवाफ़ करना ज़रूरी है। अगर इन दिनों के बाद तवाफ़ किया जाए तो जायज़ तो है. लेकिन **दम (यानी कुर्बानी)** देना पड़ेगी।

बाक़ी अइम्मा के नज़दीक दम नहीं है।

मिना की रातें: “अय्याम तशरीक़”

ज़िलहिज्जा: 11, 12 और 13 की रातें

तवाफ़-ए-इफ़ाज़ा (तवाफ़-ए-ज़ियारत) के बाद कुर्बानी के दिन आप मिना वापस तशरीफ़ ले जाएं और ज़िलहिज्जा की 11, 12 और 13 “अय्याम तशरीक़” की रातें मिना में गुज़ारें और अगर दो रातें ही गुज़ारें तो यह भी जायज़ है।

## जमरात का तआरुफ़

रिवायत में है कि हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम जब अल्लाह के हुक्म से अपने फ़रज़ंद हज़रत इस्माईल अलैहिस्सलाम को जूबाह करने के इरादे से ले कर चले और मिना की हुदूद में पहुंचे तो एक जगह शैतान सामने आया और उस ने इस इरादे से आप अलैहिस्सलाम को बाज़ रखने की कोशिश की। हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने उस मरदूद को सात कंकरियां मारी जिस से वह ज़मीन में धंस गया और आप अलैहिस्सलाम आगे रवाना हो गए। कुछ दूर चले थे कि वह दोबारा सामने आया। उसी तरह फिर हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने उस को कंकरियां मारी वह दफ़ा हो गया। आप अलैहिस्सलाम आगे चल दिए। कुछ दूर जाने के बाद तीसरी दफ़ा वह फिर आया तो इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने उसी तरह उस के कंकरियां मारी जिस से वह ज़मीन में धंस गया। अल्लाह तआला को हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम की मुहब्बत भरी यह अदाएं ऐसी पसंद आई कि कयामत तक के लिए इस को भी हज का जुज़ बना दिया गया। इन तीनों जगहों पर बतौर निशान तीन सुतून बने हुए हैं और हुज्जाज किराम इन निशानियों पर कंकरियां मारते हैं। इन्हीं निशानों को जमरात कहते हैं।

## रमी जमरात

इन दो या तीन दिनों में तीनों जमरात को रमी करें। रमी ज़वाल (दोपहर) के बाद की जाएगी। पहले जमरा ऊला को रमी करें यह जमरा मक्का से सब से ज़्यादा दूर है फिर जमरा वुस्ता और आखिर में जमरा अक़बा को इस तरह रमी करें कि हर एक को सात कंकरियां मारें और हर कंकरी मारते वक़्त अल्लाहु अकबर पढ़ें।

रमी करते वक़्त ज़रूरी बातें:

- रमी के लिए बड़े बड़े पत्थर और जूते इस्तेमाल न करें।
- रमी करते वक़्त शैतान को गालियां न दें।
- सात कंकरियां एक साथ न मारें बल्कि एक एक कर के मारें।

## मिना में दो दिन

अगर आप मिना में दो दिन के क्रियाम पर इकतिफ़ा करें तो दूसरे दिन गुरूबे आफ़ताब से पहले पहले मिना से निकल जाएं और अगर मिना में सूरज गुरूब हो जाए तो फिर यह रात भी मिना में बसर करना होगी और 13 तारीख़ को भी रमी करना होगी और अफ़ज़ल भी यही है कि आप 13 तारीख़ की रात भी मिना में बसर करें।

## चौथा और पांचवां दिन — 11 और 12 ज़िलहिज्जा

ज़िलहिज्जा 11 और 12 को कंकरी मारने का वक़्त ज़वाल (दोपहर) के बाद शुरू होगा अगर सुबह कंकरियां मारोगे तो अदा नहीं होगी और दम पड़ जाएगी।

ज़िलहिज्जा की 11 तारीख को 21 कंकरियां मारनी है।

जमरात को कंकरियां मारना (रमी करना):

मिना वापस जा कर तीनों जमरात (सुतूनों) पर सात सात कंकरियां मारें। पहले जमरा ऊला को (7 कंकरियां), फिर जमरा वुस्ता को (7 कंकरियां), और आखिर में जमरा अक़बा को (7 कंकरियां) मारें।

ज़िलहिज्जा की 12 तारीख को 21 कंकरियां मारनी है।

जमरात को कंकरियां मारना (रमी करना):

मिना वापस जा कर तीनों जमरात (सुतूनों) पर सात सात कंकरियां मारें। पहले जमरा ऊला को (7 कंकरियां), फिर जमरा वुस्ता को (7 कंकरियां), और आखिर में जमरा अक़बा को (7 कंकरियां) मारें।

पहले शैतान को कंकरियां मारने के बाद क़िब्ला रुख़ हो कर लंबी लंबी दुआएं करें और दूसरे शैतान को कंकरियां मारने के बाद भी क़िब्ला रुख़ हो कर लंबी लंबी दुआएं करें और आखिर में जमरा अक़बा को कंकरियां मारने के बाद दुआ न करें, वापस अपने खेमों में चले जाएं।

## रुखसती (मिना से मक्का वापस जाना)

12 ज़िलहिज्जा को जमरात को कंकरियां मारने के बाद, आप सूरज डूबने से पहले मिना से मक्का वापस जा सकते हैं, जिस से आप का हज मुकम्मल हो जाता है। (अगर आप 13 ज़िलहिज्जा को भी रुक कर **जमरात को कंकरियां मारना** चाहें तो ज़्यादा सवाब के लिए ऐसा कर सकते हैं)।

## रमी में नियाबत

मरीज़ और कमज़ोर आदमी के लिए यह भी जायज़ है कि वह रमी के लिए किसी को अपना नायब मुकर्रर कर दे। नायब के लिए यह जायज़ है कि वह एक ही जगह खड़े हो कर पहले अपनी तरफ़ से **रमी** करे और फिर उस की तरफ़ से **रमी** करे जिस ने उसे अपना नायाब बनाया है।

## तवाफ़-ए-विदा

तमाम मनासिक हज अदा करने के बाद जब आप अपने वतन वापस जाने का इरादा करें तो काबा शरीफ़ का तवाफ़ करें इसे तवाफ़-ए-विदा कहा जाता है।

**हैज़ व निफ़ास वाली ख़वातीन के सिवा** हर शख्स के लिए यह तवाफ़ फ़र्ज़ है।

बैतुल्लाह से निकलते वक़्त उल्टे पांव चलना मना है।

## कुछ हिदायात

हज और उमरे की अदाईगी पर जाने वालों के लिए कुछ ज़रूरी हिदायात हैं। लिहाज़ा इन की पाबंदी ज़रूरी है। इख़्तिसार के साथ उन का ज़िक्र किया जाता है:

- 1) दीन के फ़राइज़ मसलन: नमाज़ बरवक़्त बाजमाअत बाक़ायदगी के साथ अदा करें।
- 2) इन तमाम उमूर से इज्तिनाब करें जिन से अल्लाह तआला ने मना फ़रमाया है मसलन: बेहूदा गुफ़्तगू, गुनाह के काम, लड़ाई झगड़ा और अल्लाह व रसूल की नाफ़रमानी के दीगर काम।
- 3) इस मुक़द्दस सफ़र के दौरान अपने क़ौल या अमल से किसी भी मुसलमान भाई को कोई तकलीफ़ न दें।
- 4) उन तमाम बातों से इज्तिनाब करें जो हालत एहराम में ममनूअ हैं मसलन:
  - हालते एहराम में बाल या नाखून न काटें और अगर कोई बाल वगैरा क़स्द व इरादे के बगैर अज़ खुद गिर जाए तो इस में कोई हरज नहीं।
  - हालते एहराम में जिस्म, लिबास और खाने पीने में खुशबू इस्तेमाल न करें। एहराम बांधने से पहले इस्तेमाल की गई खुशबू का कोई असर बाक़ी हो तो इस में कोई हरज नहीं।

- हालते एहराम में शिकार न करें, हरम का कोई दरख्त न काटें और कोई गिरी पड़ी चीज़ न उठाएं इल्ला यह कि उस का एलान करना मक़सूद हो। **रसूलुल्लाह** ﷺ ने इन तमाम चीज़ों से मना फ़रमाया है।
- 5) सर को कपड़े के साथ न ढांपें अलबत्ता छतरी इस्तेमाल करने या सामान वग़ैरा उठाने में कोई हरज नहीं।
  - 6) हालते एहराम में सिला हुआ कपड़ा मसलन क़मीस, टोपी, शलवार अमामा और मोज़े वग़ैरा न पहनें।
  - 7) औरत के लिए भी हालत एहराम में यह मना है कि वह हाथों में दस्ताने पहने या चेहरे को नक़ाब और बुर्का वग़ैरा के साथ ढांपे। हां अलबत्ता जब अजनबी मर्द सामने आजाएं तो फिर हालत एहराम में भी पर्दा करना ज़रूरी है।
  - 8) अगर मुहरिम भूल कर या नावाक़फ़ियत की वजह से सिला हुआ कपड़ा पहन ले या सर ढांप ले या ख़ुशबू इस्तेमाल इस्तेमाल कर ले या बाल काट ले या नाखून तराश ले तो इस पर कोई फ़िदया नहीं है। हां अलबत्ता जब इसे याद आजाए या जब शर्ई हुक्म मालूम हो जाए तो फिर फ़ौरन उस से रुक जाए।

- 9) हालते एहराम में जूते, अंगूठी, चश्मा, आला समाअत, घड़ी और ऐसा बैग वगैरा इस्तेमाल करना जायज़ है जो रक़म और कागज़ात वगैरा की हिफ़ाज़त के लिए हो।
- 10) एहराम को बदलना, धोना, और साफ़ करना... सर और जिस्म को धोना यानी गुस्ल करना भी जायज़ है और इस से अगर क़स्द व इरादे के बग़ैर कुछ बाल गिर जाएं तो इस में कोई कफ़़ारा वगैरा नहीं।

## वापसी की दुआ

آئِبُونِ تَائِبُونَ عَابِدُونَ لِرَبِّنَا حَامِدُونَ - (بخاری)

आइबूना ताइबूना आबिदूना लिरब्बिना हामिदून। (बुखारी)

हम लौट रहे हैं तौबा करने वाले, इबादत करने वाले और अपने परवरदिगार की तारीफ़ करने वाले।

## मस्जिद में दो रकअत नमाज़

सफ़र से वापसी पर घर में दाखिल होने से पहले मस्जिद में दो रकअत बतौर शुक्राना अदा करें जैसा कि रसूलुल्लाह ﷺ का मामूल मुबारक था। (बुखारी)

## दावत का एहतेमाम

हाजी जिस वक़्त बख़ैर व आफ़ियत घर पहुंच जाए तो अपनी हिम्मत व इस्तिताअत के मुताबिक़ दोस्त अहबाब और गुरबा व मसाकीन की दावत करे।

हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अंहु फ़रमाते हैं कि हुज़ूर अकरम ﷺ जब मदीना मुनव्वरा तशरीफ़ लाए तो आप ﷺ ने ऊंट या गाय ज़बह फ़रमा कर लोगों की दावत की।



# **UMRA**PRO

